B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-1
HISTORY HONS.
PAPER-1
UNIT-1 (II)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KUMAR MISHRA
DATE-14 /10/2020

TOPIC- धार्मिक आंदोलन – जैनधर्म

[RELIGIOUS MOVEMENTS-JAINISM]

PART-1

Scanned with CamScanner

धार्मिक आंदोलन - जैन धर्म

नवीन धर्मों के उदय के कारण

छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धर्मसुधार आंदोलन की पृष्ठभूमि उत्तरवैदिक काल के अंत तक तैयार हो चुकी थी। तत्कालीन सामाजिक तनाव के वातावरण, आर्थिक क्षेत्र में हुए व्यापक परिवर्तन एवं यज्ञ, बलि प्रधान आडंबरयुक्त धार्मिक मान्यताओं ने सुधार आंदोलन की भूमिका तैयार कर दी। उपनिषदों के क्रांतिकारी उपदेशों और विचारशील धार्मिक नेताओं के अभ्युदय ने इस आंदोलन को आरंभ कर दिया -

1. सामाजिक कारण — जटिल वर्णव्यवस्था एवं तनावपूर्ण सामाजिक जीवन

उत्तरवैदिक काल से वर्णव्यवस्था जटिल होती चली गई। उसका आधार कर्म नहीं जन्म हो गया। समाज स्पष्टतः सुविधाभोगी एवं सुविधाविहीन वर्ग में बँट गया। ब्राह्मण एवं क्षत्रिय सुविधाभोगी वर्ग थे। एक के हाथ में धार्मिक सत्ता थी तो दूसरे के हाथ में राजसत्ता। प्रारंभ में ये दोनों एक-दूसरे का सहयोग कर अपने विशेषाधिकारों की रक्षा करते थे। दूसरी तरफ समाज के सुविधाविहीन वर्ग में वैश्य एवं शूद्र थे जिन्हें निम्न स्तर का दर्जा दिया गया था।

कृषि व्यवस्था के स्थायी हो जाने एवं मुद्रा के चलन तथा वाणिज्य व्यापार के विकास से वैश्यों की स्थिति यद्यपि आर्थिक दृष्टि से मजबूत हो रही थी किंतु सामाजिक दृष्टि से उन्हें समान नहीं प्राप्त नहीं था। शूद्रों की स्थिति सबसे खराब थी, उन्हें तीनों वर्णों का सेवक माना गया।

जब क्षत्रियों की राजनीतिक स्थिति में मजबूती आई तो उन्हें यह मंजूर नहीं हुआ कि वे ब्राह्मणों से नीचे रहें। अतः ब्राह्मण एवं क्षत्रिय के बीच वैमनस्य की स्थिति हो गई। क्षत्रिय ऐसी व्यवस्था चाहते थे कि उनकी स्थिति ऊपर हो जाए और ब्राह्मणों पर नियंत्रण स्थापित किया जा सके। ऐसी व्यवस्था तभी संभव थी जब समाज से पुरानी धार्मिक प्रथाओं की मान्यताओं का प्रभाव समाप्त हो जाए। इसलिए क्षत्रियों ने नवीन धार्मिक संप्रदायों को समर्थन दिया। वहीं दूसरी तरफ वैश्य एवं शूद्र भी इस व्यवस्था में परिवर्तन चाहते थे। वहीं स्त्रियों के वैदिक काल में प्राप्त धार्मिक अधिकार इस काल में समाप्त हो गए थे। अतः उनमें भी अपनी स्थिति में परिवर्तन की चाहत थी। इन सभी वर्गों ने धर्मसुधार आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. आर्थिक कारण — नई अर्थव्यवस्था का प्रभाव

लौह तकनीकी की भूमिका - उत्तरवैदिक काल में कृषि आर्थों का मुख्य पेशा हो गया। इस युग में लौह उपकरणों का प्रयोग कृषि क्षेत्र में होने लगा। फलतः कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। जब हल खींचने के लिए बड़ी संख्या में बैलों की जरूरत थी जैसा कि काठक संहिता में 24 बैलों द्वारा जुताई के उल्लेख से प्रमाणित है किन्तु बाद

प्रथा के कारण पशु बड़े पैमाने पर नष्ट किए जा रहे थे। पशुधन की सुरक्षा के बगैर कृषि की वृद्धि संभव नहीं थी और तत्कालीन प्रचलित रूढ़िवादी धार्मिक व्यवस्था में इसे रोक पाना संभव नहीं था। अतः इस धार्मिक मान्यता और कर्मकांडों में परिवर्तन आवश्यक था जो नवीन धार्मिक चिंतन के द्वारा संभव हो सका। उपनिषद में बलि प्रथा को निरर्थक बताया गया तो बौद्ध एवं जैन ने अहिंसा के सिद्धांत का प्रतिपादन कर इस आवश्यकता की पूर्ति की।

नई अर्थव्यवस्था ने दूसरे तरह से धर्मसुधार आंदोलन को प्रभावित किया। व्यापार वाणिज्य की प्रगति, सिक्कों के प्रचलन, नए व्यवसायों के उदय, सूद कर्ज की प्रथा, नगरों के उदय एवं नगरी जीवन के विकास के अन्य तत्वों को तत्कालीन धार्मिक रूढ़िवादी व्यवस्था तिरस्कार की दृष्टि से देखती थी। धर्मसूत्रों में सूदखोरी की निंदा की गई है। इस मान्यता का वैश्यों पर बुरा प्रभाव पड़ा। अतः नवोदित वैश्य वर्ग वैदिक धर्म एवं पुरोहितों का विरोधी बन बैठा और नए धार्मिक संप्रदायों का समर्थन दिया, जिन्होंने व्यापार वाणिज्य, धन संग्रह एवं सूदखोरी का समर्थन किया।

Pankaj
14/10/2020

Scanned with CamScanner